अभ्यास पत्रक

पाठ – पतझर में टूटी पत्तियाँ

नाम :- .... कक्षा :- .... अवधि :- .... अनुक्रमांक :- .... प्राप्तांक :- ....

1. गद्यांश पढ़िए और उत्तर दीजिए – (3 अंक)

“हाँ, पर गाँधी जी कभी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे। बल्कि व्यवहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाते थे। वे सोने में ताँबा नहीं बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे।”

1. गाँधी जी के व्यवहार में आदर्श का स्थान क्या था?

उत्तर - ....

2. लेखक ने व्यावहारिकता को किस धातु के प्रतीक रूप में देखा है?

उत्तर - ....

3. इस उद्धरण से लेखक का कौन-सा मूल संदेश सामने आता है?

उत्तर - ....

2. Assertion-Reason आधारित प्रश्न – (2x1=2 अंक)

4. **कथन:** लेखक के अनुसार व्यावहारिकता समाज को ऊपर नहीं उठाती।
   कारण: व्यावहारिक लोग केवल लाभ-हानि देखकर निर्णय लेते हैं।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है। (ग) A: सही, R: गलत
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है। (घ) A: गलत, R: सही
5. **कथन:** लेखक ‘झेन परंपरा’ को जीवन में ठहराव और शांति लाने वाली विधि मानता है।
   कारण: चाय पीने की प्रक्रिया में ध्यान, शांति और वर्तमान क्षण में जीने की अनुभूति होती है।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है। (ग) A: सही, R: गलत
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है। (घ) A: गलत, R: सही

3. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs) – (5x1=5 अंक)

6. लेखक रविंद्र केलेकर किस क्षेत्र से संबंध रखते हैं?
   (क) कोंकण (ख) अंडमान (ग) महाराष्ट्र (घ) नेपाल
7. ‘गिन्नी के सोने’ में लेखक ने आदर्शों की तुलना किससे की है?
   (क) ताँबे से (ख) चाँदी से (ग) शुद्ध सोने से (घ) गहनों से
8. झेन परंपरा से लेखक को क्या अनुभव हुआ?
   (क) भविष्य की चिंता (ख) चाय का स्वाद
   (ग) वर्तमान क्षण का विस्तार (घ) चाय का गरमापन
9. जापान में चाय पीने की विधि को क्या कहा जाता है?
   (क) चा-नो-यू (ख) झेन-पथ (ग) शांत-सेरेमनी (घ) चाय-परंपरा
10. लेखक के अनुसार जापानी लोग किस रोग से अधिक पीड़ित हैं?
    (क) मधुमेह (ख) कैंसर (ग) मानसिक (घ) श्वसन

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक, कुल 6 अंक)

11. लेखक के अनुसार आदर्शवादी लोग समाज को क्या देते हैं?

उत्तर - .....

.....

.....

12. लेखक को चाय पीते समय किस प्रकार की मानसिक स्थिति का अनुभव हुआ?

उत्तर - .....

.....

.....

13. लेखक ने वर्तमान को ही सत्य क्यों कहा है?

उत्तर - .....

.....

.....

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक) *(उत्तर 100–120 शब्दों में दीजिए)*

14. लेखक ने "गिन्नी का सोना" प्रसंग के माध्यम से व्यावहारिकता और आदर्शों के संबंध को किस प्रकार स्पष्ट किया है?

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक) *(उत्तर 160–180 शब्दों में दीजिए)*

15. "झेन परंपरा की 'टी-सेरेमनी' आधुनिक जीवन में मानसिक शांति का अनूठा मार्ग है" – इस कथन की पुष्टि पाठ के आधार पर कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

egyanarchive

उत्तर कुंजी

1. गाँधी जी आदर्शों को सर्वोपरि मानते थे और व्यावहारिकता को उसी स्तर पर ले जाते थे।
2. लेखक ने व्यावहारिकता को 'ताँबा' कहा है।
3. यह कि आदर्शों को कमजोर नहीं पड़ने देना चाहिए, बल्कि व्यवहार को उनके अनुरूप बनाना चाहिए।
4. (क)
5. (क)
6. (क)
7. (ग)
8. (ग)
9. (क)
10. (ग)
11. आदर्शवादी समाज को शाश्वत मूल्य देते हैं – जैसे सत्य, अहिंसा, समता और परोपकार।
12. चाय पीते समय लेखक को लगा कि वह केवल वर्तमान में जी रहा है – जैसे समय ठहर गया हो।
13. क्योंकि भूतकाल बीत चुका है और भविष्य आया नहीं है, केवल वर्तमान ही हमारे पास है।

14. लेखक ने 'गिन्नी का सोना' प्रसंग में शुद्ध सोने को आदर्शों का प्रतीक और ताँबे को व्यावहारिकता का प्रतीक माना है। जब आदर्शों में व्यावहारिकता मिला दी जाती है, तो वह 'गिन्नी का सोना' बन जाता है – दिखने में अच्छा, पर मूलभूत रूप में शुद्ध नहीं। लेखक ने गाँधी जी को एक ऐसे आदर्शवादी के रूप में प्रस्तुत किया है जिन्होंने आदर्शों से समझौता नहीं किया, बल्कि व्यवहार को आदर्श के स्तर पर उठाया। यह दृष्टिकोण समाज को ऊँचाई देता है, न कि गिरावट की ओर ले जाता है।

15. पाठ 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' में लेखक रविंद्र केलेकर ने जापान की 'झेन परंपरा' की टी-सेरेमनी का सुंदर वर्णन किया है। यह विधि केवल चाय पीने का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन को शांतिपूर्ण ढंग से जीने की कला सिखाती है। चाय पीते समय लेखक ने महसूस किया कि उसका मन भूत और भविष्य से हटकर केवल वर्तमान में केंद्रित हो गया। चाय की दो बूँदें, धीमी गति, गरिमा से भरा वातावरण – यह सब मिलकर मानसिक गति को धीमा कर देता है। आज के तेज़, तनावग्रस्त जीवन में यह विधि आत्म-शांति और ध्यान की अनुभूति का अनोखा उपाय बन जाती है। यह पाठ आधुनिक समाज को ठहरकर सोचने और जीने का पाठ पढ़ाता है।